कल्पनाओं के क़ाफ़िले

बिमला रावर

माण्डवी प्रकाशन
ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

❐ ISBN-81-8212-026-8 ❐

प्रकाशक	माण्डवी प्रकाशन 88, रोगनग्रान, दिल्ली गेट, ग़ाज़ियाबाद-201001
दूरभाष	9810077830
ईमेल	mandvi.prakashan@gmail.com
संस्करण	अक्टूबर 2013
मूल्य	150 /- रुपये मात्र
सर्वाधिकार ©	बिमला रावर
मुद्रक	आशा प्रिंटर्स, मालीवाड़ा, ग़ाज़ियावाद

"KalpanaoN ke qafile" by Bimla Ravar

जीवन की यात्रा का काव्य रूप में दखान है ये कविताएं

मनुष्य जीवन के हर क्षण से सीखता है. यह शिक्षण की यात्रा अनवरत चलती रहती है. हम सभी आम इंसान के रूप में जन्म लेते हैं और अपने निजी अनुभवों को उत्कृष्ट कर सक्षम और विलक्षण बनाते हैं. एक शिक्षिका के रूप में बड़ी बहिन विमला रावर जी ने जीवन के वे कार्य बड़ी ही कुशलता से संपादित किये हैं. वह बहुत ही संवेदनशील, जागरुक, व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और इन सब से ऊपर मानवता के हितार्थ समर्पित होकर इस सृष्टि और प्रकृति के संग अपनी सकारात्मकता और रचनात्मकता से शब्द संसार रचती हैं. उनकी कविताओं में महकता हुआ बचपन है जहाँ वे बालगीतों की फुलवारी के रूप में अनेक सुन्दर और शिक्षाप्रद रचनाएँ उगा चुकी हैं. वह बहुत ही सरल, सहृदय, सहनशील और सत्यपरक सृजन की पक्षधर हैं ऐसा उनकी रचनाओं के माध्यम से स्पष्ट परिलक्षित होता है.

प्रत्येक व्यक्ति का काव्य या किसी भी प्रकार का लेखन सिर्फ स्वान्तः सुखाय तो होता है पर जब इसमें समाज और मानवता का हित भी जुड़ जाए तब यह एक ऐसे विषय का कारक बन जाता है जिसमे सुख, संतुष्टि के साथ एक उद्देश्य और जन सेवा का प्रयोजन भी सिद्ध होता है. बहिन विमला रावर जी का काव्य संसार और लेखन इसी श्रेणी में आता है. वे जीवन की नवकोंपलों को सीख की घुट्टी पिलाती हैं उनके साथ बाल गीतों में मुस्कुराती तुतलाती हैं और कभी कभी उनकी कविता इतना सटीक जीवन का अर्थ दे जाती है कि पाठक अचंभित हो जाता है. उनका सृजन बहुत ही सरल और सुग्राह्य है. यह एक रचनाकार की विजय है. उनका काव्य सर्व साधारण के लिए है जिसमें जीवन की विद्वता भी बहुत सूक्ष्म रूप में समाहित है. यह उनके निजी अनुभवों का जागृत शब्द संसार है.

कविता के माध्यम से जागृति लाना, लोगों को सचेत करना, सब को अपने दायित्व और कर्तव्यों का बोध कराना तथा संवेदना के संग नेह-स्नेह, सहयोग, साहचर्य एवं भाई-चारे का पाठ पढ़ाने जैसा महती कार्य एक अध्यापिका के रूप में उन्होंने जीवन भर किया है और आज भी यही उनका ध्येय और उद्देश्य है. इनकी कविताओं में जीवन के अनेकों जिवंत शब्द चित्र हैं जिनमें प्रेम, व्यथा, संघर्ष , संवेदना और सन्देश की धाराएं अविरल वह रही हैं। वे जब नारी के विषय में बात करती हुई अपनी एक रचना में संबोधित करती हैं कि-

मत रो मैना इस पिंजरे में, आँसू नहीं बहाते हैं
इस कूचे में रहने वाले, कभी नहीं मुस्काते हैं

एक औरत की ससुराल की वेदना को उन्होंने जो शब्द दिए हैं वह मन की तलहटी तक को हिला देते हैं. जब वह समय का लेखा जोखा अपनी कलम से लेती हैं तब लिखती हैं कि-

वक्त इंसान के हालात बदल देता है !
वक्त इंसान के जज्बात बदल देता है ,
वक्त इंसान के अहसास बदल देता है,
वक्त इंसान के दिन रात बदल देता है !!

उनकी जिजीविषा की एक मिसाल और देखिये

बुझते दीयों से रौशनी की उम्मीद मत करो,
रोते दिलों से गीत की उम्मीद मत करो !

और वे आगे कहती हैं कि -

अपनों से तुम प्यार की उम्मीद मत करो ,
सपनों से कभी सत्य की उम्मीद मत करो !

जीवन को समग्र रूप में जीने का यह सन्देश कितना सक्षम है. उनकी इस काव्य धारा में अनेकों जीवन सरिताएं कविता के रूप में जीवन जल लेकर प्रवाहमान हैं जो हमें अनेकानेक सन्देश देती हैं. उनकी रचनाओं में 'कल्पनाओं के काफिले' जिस कदर आ कर शब्द रूप लेकर ठहर गये हैं वे सहज ही जीवन को एक अलग दृष्टी से देखने का मापदंड पाठक को देते हैं. यह कविता की यात्रा कम जीवन की यात्रा का काव्य रूप में बखान है जो चेहरे पर समृति के रूप में कविताओं का रूप लेकर उभर आया है.

इस काव्य में बहिन बिमला रावर जी ने जिस प्रकार अंतर मन के भावों को शब्द दि ए हैं वह हृदय को द्रवित तो करते ही हैं साथ ही हमें और विशेष रूप से हमारी सोच को झकझोरते भी हैं. इनकी रचनाएं जीवन की व्यापकता लिए हुए हैं. इन सब के मूल में संवेदना का स्वर स्पष्ट रूप से झंकृत होता है. इनकी विभिन्न काव्य-रचनाओं को पढ़ने पर लगता है कि इसमें वर्णित कथा-वस्तु को जैसे उन्होंने स्वयं ही जिया है. कई स्थानों पर अभिव्यक्ति इतनी सहज बन पड़ी है कि अचरज होता है कि एक स्त्री जीवन के हर पहलु पर किस प्रकार स्नेह का फाया लगाती है. स्त्री मन में उपजे प्रेम, विरह और एक माँ के ममत्व और जीवन के सभी पहलुओं पर उनकी लेखनी बहुत ही सरल किन्तु प्रभावशाली है. इनका सम्पूर्ण काव्य सहज बोल-चाल की भाषा में आम बोली में लिखा गया ऐसा दस्तावेज है जिसे समझने-बूझने के लिए किसी अतरिक्त श्रम की दरकार नही है. मेरा मानना है कि बात वो ही मुकम्मल होती है जो अपना मर्म लोगों तक आसानी से पहुँचाने में समर्थ हो. यह बात इस काव्य संग्रह पर बिलकुल खरी उतरती है.

बहिन बिमला रावर जी के प्रथम काव्य संग्रह 'फुलवारी बाल गीतों की' को जिस प्रकार पाठकों की सराहना और प्यार मिला है, मेरा विश्वास है कि इस काव्य संग्रह 'कल्पनाओं के काफिले' को भी आप सभी का प्यार एक प्यारे जीवन के सुगन्धित इत्र के रूप में मिलेगा जिसकी सुगंध से मन स्वतः ही प्रसन्न हो उठेगा.

मैं हृदय से बहिन विमला रावर जी को अपनी मंगल कामनाएं प्रेषित करता हूँ.

केदारनाथ 'कादर'
कवि एवं लेखक
ई मेल : kedarnath151967@gmail-com
मोबाइलः 9810989904

• अनुक्रम

1.	निराधार	11
2.	पिंजरे की मैना	12
3.	वक़्त के रंग	13
4.	सितारों से	14
5.	कुछ दर्द	15
6.	थक गई है ज़िन्दगी	16
7.	उम्मीद मत करो	17
8.	कैसा आकर्षण	18
9.	सही वक़्त	19
10.	कुछ भी लभ्य नहीं	20
11.	कल्पनाओं के क़ाफ़िले	21
12.	आशा की डोर	23
13.	केवल एक प्रश्न	24
14.	सपने अजनबी हो गए	25
15.	आगमन	26
16.	दीवारें	27
17.	अतीत की तसवीरें	29
18.	अनुभव की बात	31
19.	पागल दिल	33
20.	भ्रद पुरुष	35

21.	बड़ी मुश्किल है	36
22.	सुलगते रिश्ते	37
23.	योगी	39
24.	आरम्भ और अन्त	40
25.	नेह दीप	41
26.	प्रश्न चिन्ह	42
27.	मुक्तिदाता	43
28.	भूले फ़साने	44
29.	मेरा मौन	45
30.	खुद की राह	47
31	पुराने ज़ख़्म-नये अफ़साने	48
32	कभी तो आओ	49
33	ज़िन्दगी और हादसे	51
34	चल सखी	52
35	आधार दे दो	53
36	अनदेखे बंधन	54
37	मेरे अफ़साने	55
38	साधना और साध्य	56
39	एक नई दुनिया	57
40	नियति का संत्रास	59
41	छात्रावास में एक दिन	60
42	गहन कुहास	61
43	अब झंझावात लिए आना	62
44	भावों की छवि	63
45	कैसे-कैसे नेता	65

46	थोड़ा सा अधिकार	67
47	भोर का दिया	68
48	आती-जाती साँसे	69
49	आशीष	71
50	मित्रता	73
51	सपने	75
52	स्वर्ग और नर्क	77
53	सदियाँ और पल	79
54	यादों की पुण्य धरोहर	80
55	एक दिया	81
56	भुला दो	82
57	एक बार फिर से	83
58	खुद को बदलना होगा	85
59	विश्वास करो	86
60	दिलों को दिलों से जोड़ दो	87
61	विभिषिका युद्ध की	88
62.	ताक़तवर का कर्त्तव्य	89
63	अन्याय सहना पाप है	90
64	बिना नींव के महल	91
65	काश! हमने सोचा होता	92
66	कितनी ज़िन्दगियाँ	93
67	बूढ़ी डाल का सूखा पत्ता	95
68	आग की अभिव्यक्ति	96
69	मरे हुए दिल	97
70	कहाँ मेरा साहिल	99

71	एक दिन और बीत गया	100
72	सीख ले	101
73	दूसरों का पहरा	102
74	मीठी बातें	103
75	वास्तविक आधार	105
76	आईने के रंग	106
77	आत्म-ज्योति	107
78	आधे ग़म दुगनी खुशी	108
79	अंधेरा ही साथ होता है	109
80	बढ़ती हुई दूरियाँ	11
81	मैं टूटना नहीं चाहती	112
82	बन्धु	113
83	उपलब्धि	115
84	कहना मुश्किल है	116
85	दूसरों का दुःख	117
86	सत्य का अवलोकन	118
87	नित नये मोड़	119
88	बुढ़ापा लावारिस हो गया	121
89	रोटी के टुकड़े	123
90	नीलाभ	124
91	रिश्तों की डोरियाँ	125
92	सागर की लहरें	126
93	मनचली लहरें	127
94	ठंडी आग	128

❐

निराधार

ज़िन्दगी धुँआ बनकर उड़ गई
ज़िन्दगी की हर राह ग़लत दिशा में मुड़ गई
उजाले बदल गए अँधेरों में
उलझे हम यूँ समय की लहरों में
कि समय बन गया बड़ा दुश्मन
जला के किये ख़ाक़ जिसने तन और मन
कोई आधार न मिला मन को
कोई श्रृंगार न मिला तन को
सपने टूटे तो टूटते ही रहे
अपने छूटे तो छूटते ही रहे
रह गए.हम अकेले दुनिया में
भीड़ में भी अकेले दुनिया में
दिल में दुख-दर्द ने लगा लिया डेरा
कोई हमदर्द न रहा मेरा
लगता है ज़िन्दगी मौत से जुड़ गई
ज़िन्दगी धुँआ बनकर उड़ गई।

पिंजरे की मैना

मत रो मैना इस पिंजरे में आँसू नहीं बहाते हैं
इस कूचे में रहने वाले कभी नहीं मुस्काते हैं

कितने ग़म हैं दिल में तेरे, नहीं किसी को दिखलाना
सी कर होंठ हमेशा रहना कोई राज़ न बतलाना
कहना देखो हम तो हँसते और हमेशा गाते हैं
मत रो मैना इस पिंजरे में आँसू नहीं बहाते हैं

छोड़ा तुझे तेरे माझी ने, अपनी नैया तू खेना
पहुँच किनारे पर तू जाना, बीच भंवर में न रहना
कहना देखो हिम्मत वाले मंज़िल तक ही जाते हैं
मत रो मैना इस पिंजरे में आँसू नहीं बहाते हैं

जो कर लेते हिम्मत उनका बनता भाग्य खिवैया है
जिसने छोड़ी हिम्मत देखो उसकी डूबी नैया है
साहिल तक जाने वाले ही, इक इतिहास बनाते हैं
मत रो मैना इस पिंजरे में आँसू नहीं बहाते हैं

वक़्त के रंग

वक़्त इन्सान के हालात बदल देता है
वक़्त इन्सान के जज़्बात बदल देता है
वक़्त इन्सान के अहसास बदल देता है
वक़्त इन्सान के दिन-रात बदल देता है

वक़्त इन्साँ को शहनशाह बना देता है
वक़्त इन्साँ को सरे-राह बिठा देता है
वक़्त इन्साँ को पीर शाह बना देता है
वक़्त इन्सान को गुमराह बना देता है

वक़्त इन्सान को मजबूर बना देता है
वक़्त जीने को भी नासूर बना देता है
वक़्त दुनिया को बना देता अपना
वक़्त अपनों को कभी दूर बना देता है

वक़्त जुल्मों सितम भी ढाता है
वक़्त ख़ुशियाँ भी साथ लाता है
वक़्त जादू में बाँध जाता है
वक़्त क़िस्मत के रंग लाता है

सितारों से

बात करते हैं हम
सितारों से
ये दुनिया हमको रास आये
हुए जो दूर पास आये
सभी अपने बने इक दिन
कोई तड़पे न अपनों के बिन
दुआयें माँगते हैं
हम मज़ारों से
हमारी रूह को ग़म से हैं भरते
चाँद तारे क्यों
हमारे दिल में दुनिया के
अँधेरे हैं उतारे क्यों
गिला करते हैं हम
नज़ारों से
अपनी क़िस्मत को
अपने हाथों से बना
ख़ुद पे भरोसा करके
ख़ुदा को अपना बना
यही कहते हैं हम
हज़ारों से ।

कुछ दर्द

कुछ ज़ख़्म ऐसे होते हैं
जो दिखाये नहीं जाते
कुछ दर्द ऐसे होते हैं
जो बताये नहीं जाते
कुछ राज़ अपनों के
सुनाये नहीं जाते
कुछ आँसू
सिर्फ़ पिये जाते हैं
बहाये नहीं जाते
कुछ कंटीले काँटे
दिल से निकाले नहीं जाते
कुछ रंज जो जिगर से
संभाले नहीं जाते
कुछ दर्द ज़िन्दगी के
जो सिर्फ़ सहने हैं
कुछ राज़ ज़िन्दगी के
किसी से नहीं कहने हैं।

थक गई है ज़िन्दगी

एक चौराहे पे आकर रुक गई है ज़िन्दगी
ऐसा लगता है कि जैसे थक गई है ज़िन्दगी

हर तरफ़ इक मोड़ है, मेरे क़दम जम से गए
किस तरफ़ मुड़ना है मेरे पाँव क्यों थम से गए

मंज़िलों के रास्ते तो दूर तक दिखते नहीं
अपने क़दमों के निशाँ भी दूर तक मिलते नहीं

हर गली जाती है जैसे इक अँधरी राह पर
हर तरफ़ जैसे पड़ी हैं बेड़ियाँ सी पाँव पर

एक सूनी सी डगर पर कट गई है ज़िन्दगी
ऐसा लगता है कि जैसे थक गई है ज़िन्दगी।

सही वक़्त

सही वक़्त का इन्तज़ार करो
बहुत वक़्त है अभी
बहुत कुछ खोने में
ज़िन्दगी गँवाओ नहीं
निराशा या रोने में
कुछ नहीं पाओगे
मोम सा घुलने में
हाथ कुछ न आयेगा
छुप-छुप कर घुटने में
इसलिये रखो धैर्य
मन को तुम शान्त करो
सही वक़्त का इन्तज़ार करो
लक्ष्य जब निर्धारित है
क्यों हृदय चंचल है
पाँव थरथराये क्यों
मन में क्यों कम्पन है
पथ पर जब बढ़े पाँव
मुड़कर क्यों देख रहे
कार्य पूर्ण करने हैं
फिर क्यों संदेह रहे
काम तुम करो चलो
फल की न चाह करो
सही वक़्त का इन्तज़ार करो।

कुछ भी लभ्य नहीं

क्यों बुलायें ऐसे सपनों को
जिनका कोई लक्ष्य नहीं
गुनगुनाएँ क्यों ऐसे गाने
जिनमें कोई तथ्य नहीं
दिल में दर्द क्यों ऐसे होते
जिनका कोई पथ्य नहीं
क्यों ऐसी बातें करते हो
जिनमें कुछ भी सत्य नहीं
जग को बना रहे क्यों ऐसा
जिनमें कुछ भी रम्य नहीं
मत अपराध करो तुम ऐसे
जो होते हैं क्षम्य नहीं
झूठे सपनों को मत पालो
तुम तो इतने अज्ञ नहीं
जो जीता है सिर्फ़ स्वप्नों में
उसको कहते सभ्य नहीं
सुख बाँटो दुःख रखो हृदय में
गाँठ बाँध रखो यह बात
ज़ख़्म हृदय के अगर दिखायें
इसमें कुछ भी लभ्य नहीं।

उम्मीद मत करो

बुझते दियों से
रौशनी की उम्मीद मत करो
रोते दिलों से
गीत की उम्मीद मत करो
सूखे हृदय से
प्रीत की उम्मीद मत करो
हारे हृदय से जीत की
उम्मीद मत करो
घायल हृदय से
ज्ञान की उम्मीद मत करो
इक बावरी से
ध्यान की उम्मीद मत करो
इक अजनबी से
नेह की उम्मीद मत करो
बुझते दिये में
स्नेह की उम्मीद मत करो
अपनों से तुम कभी
प्यार की उम्मीद मत करो
सपनों से कभी
सत्य की उम्मीद मत करो।

कैसा आकर्षण

जीवन से कैसा आकर्षण
कभी न कुछ जीवन में पाया
कभी न कुछ भी हम कर पाये
जब भी पीछे मुड़ कर देखा
देखे ग़म के काले साये
कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखता है
धुँधला गईं सभी तस्वीरें
कैसे बदल गई पल भर में
ग़म के मारों की तक़दीरें
जो भी थे आदर्श बनाये
बने पाँव की वे ज़ंजीरें
कैसे करूँ भरोसा उन पर
हाथों में जो बनीं लक़ीरें
भाग्यहीन के पथ पर रहते
संघर्षों के साये भीषण
जीवन से कैसा आकर्षण।

आशा की डोर

ज़िन्दगी के सफ़र के लिये
बहुत है एक ही हमसफ़र
एक मनचाहे साथी से
बस जायेगा मेरा एक शहर
भीड़ के समन्दर में
अकेला घुटता बहता रहूँ
मुझे मंज़ूर नहीं है
विस्तृत सागर में
किनारे पर पहुँचने के लिए
काफ़ी है एक लहर
आशा की डोर पकड़कर
उड़ जाऊँगा मंज़िल तक
मुझे नहीं पीना है
विवशताओं का ज़हर
जीवन को निराशाओं के
काँटों से छुड़ाना होगा
मुझको आशा में जीना है
हर पल-पल आठों पहर
बरसों-बरस सताया
रातों के अँधेरे ने
पर जीवन में ज़रूर आयेगी
एक दिन सुनहरी सहर।

केवल एक प्रश्न

भग्न हृदय मन्दिर में मेरे
स्थापित नहीं कोई प्रतिमा
ज्योति नहीं जलती दीपक की
चर्चित नहीं कोई महिमा
कैसा है यह मन्दिर जिसमें
रहता कोई राम नहीं
भक्ति, आरती, पूजा, वन्दन
कभी सुबह और शाम नहीं
किसी भक्त ने नहीं चढ़ाये
कभी भक्ति से कोई फूल
इस मन्दिर की चौखट पर तो
बिखरे कटुक कंटीले शूल
कोई तार नहीं बजता है
शब्द हो गए सारे मौन
केवल एक प्रश्न आता है
मैं हूँ कौन ?
मैं हूँ कौन ??

कल्पनाओं के क़ाफ़िले

कल्पनाओं के क़ाफ़िले
जब निकल पड़ते हैं
तो कितनी तसवीरें
कितनी परछाईयाँ
आ-आकर
जुड़ती चली जाती हैं
और क़ाफ़िला
बढ़ता चला जाता है
मैं कल्पनाओं के सागर में
डूबती उतराती
वर्षों पीछे छूटी गहराइयों में
डूबती चली जाती हूँ
चाँद की मद्धम रौशनी
पेड़ों के पत्तों से गुज़रती
हवा की सरसराहट
दूर से आते
कुछ परिचित क़दमों की आहट
गुज़रे ज़माने की
भूली सा यादें
कितनी अनकही
अधूरी मुरादें
कितने साथी
कितने रिश्ते
कुछ चुभे काँटों से

कुछ निकले फ़रिश्ते
जो हमें भूल गए
जिन्हें हम भुलाना चाहते हैं
जिन भूलों से हम
दामन छुड़ाना चाहते हैं
वे सारे पल
न जाने क्यों
पीछा नहीं छोड़ते हैं
कल्पनाओं के क़ाफ़िले
जब तब निकल पड़ते हैं।

दीवारें

मैंने अपने सपनों को साकार किया
अपने घर की स्वप्निल कल्पना को
एक आकार दिया
मन में मात्र एक आकांक्षा थी
मेरे घर में
ज़मीन भी मेरी हो और आसमान भी मेरा हो
सपना पूरा हुआ
मेरे घर को
सूरज, चाँद, तारों की ज्योति प्रकाशित करने लगी
दूर-दूर से आती हवायें घर को सुवासित करने लगीं
आँगन के पेड़ पर चिड़िया चहकने लगी
पौधों पर रंग-बिरंगी कलियाँ महकने लगीं
रात को चाँद की किरणें
दिन में गुनगुनी धूप के साये
मेरे आँगन में मचलने लगे
हवाओं के झोंके आ-आकर
मुझसे और मेरे पेड़-पौधों से खेलने लगे
अचानक एक दिन
सब कुछ बदल गया
पड़ोस के घर अचानक
ऊँची-ऊँची दीवारों में बदल गए
और मेरा छोटा-सा सपनों का संसार
दीवारों से घिर कर गुफ़ा में बदल गया
मेरे सूरज चाँद सितारे

हवाओं और बादलों के वे इशारे
ऊँची दीवारों के पीछे खो गए
रह गए सिर्फ़ मेरी आँखों में झिलमिलाते मोती
मेरे दिल पर पड़े काले-काले बादलों के साये
और अन्तर में उमड़ते सावन भादों
मैं बार-बार आँगन में जाती हूँ
और आसपास की दीवारों से टकराकर
वापिस आ जाती हूँ
ऊँची दीवारों के बीच
मेरी ज़मीन वीरान हो गई
आसमान खो गया
हवायें रुक गईं
चाँद तारों को ढूँढती आँखें
नीचे झुक गईं।

सपने अजनबी हो गए

ये कैसा वक़्त आया आज मुझ पर
कि अपने अजनबी हो गए
उड़ी नींदें गया सुख-चैन
सपने अजनबी हो गए
अजब से सख़्त से कुछ दर्द
आँखों में सिमट आये
रहे कुछ आँख के अन्दर
तो कुछ बाहर निकल आये
न जाने देखना क्या चाहती आँखें
उन्हें अब दिख रहा है क्या
ज़माना बदलता पल में
भला पल का भरोसा क्या
बहुत से ज़ख़्म ऐसे हैं
जिन्हें सिलता नहीं कोई
बहुत से लोग दुनिया में
मगर अपना नहीं कोई
रहा अब पास में है क्या
करें विश्वास अब किसका
छुड़ाकर हाथ चल निकला
कि पकड़ा हाथ भी जिसका
अँधेरे रात के क़ातिल
सितारे अजनबी हो गए
ये कैसा वक़्त आया आज मुझपर
कि अपने अजनबी हो गए।

आगमन

एक-एक कर छोड़ चले हैं साथ
वो साथी
जो बरसों से निभा रहे थे साथ
पिघल कर बही नैन की ज्योति
बदल कर बनी अँधेरी रात
दिखाते थे जो चमक हँस-हँसकर
मुँह को छोड़ चले वो दाँत
पाँव टूटे से जाते हैं
घुटने रूठे से जाते हैं
ऊँगलियाँ अकड़ रहीं जैसे
छाती भी जकड़ रही जैसे
हृदय धड़कता रहता है
पेट गड़बड़ सा रहता है
जीभ का स्वाद कहाँ खोया
स्वाद को याद किया रोया
बाल काले से श्वेत हुए
कपासी रंग से एक हुए
साल पर साल बीतते हैं
बदल कर जीवन का इतिहास
छोड़ते जाते सब साथी
रहे थे बरसों तक जो साथ
आगमन किसका है साथी
बता दो अब तो मन की बात ।

✳

अनुभव की बात

ध्यान से चुन लो
क्या ग़लत
क्या सही है
यूँ तो होना है जो
होना वही है
फिर भी
ठीक नहीं यूँ हारना
हमें है ज़िन्दगी को सँवारना
बहुत सी राहें हैं
दोराहे, चौराहे हैं
सही राह
ज़िन्दगी को सही दिशा देगी
ग़लत राह
हमें दिग्भ्रमित कर देगी
दिशाहीन जीना
जीना नहीं है
जानबूझ कर तो
ज़हर पीना नहीं है
ध्यान को केन्द्रित करो
वरीयता को अंकित को
त्याग दो अनुचित को
संसार में बहुत कुछ है
लुभाने के लिए
न अपनाओ वंचित को

ध्यान से व्यय करो
संचित को
अनुभव ने बात
यह ही कही है
ध्यान से चुन लो
क्या ग़लत क्या सही है।

अतीत की तसवीरें

अतीत की यादों को भूल जाओ
कहना बड़ा आसान है
मैं अतीत को भुलाकर
चिन्तारहित हो जाऊँगा
कहने वाला भी बड़ा नादान है
अतीत की यादें जब-तब दिल और दिमाग़ में
आकार धारण करने लगती हैं
जब-तब तसवीरें बनकर
आँखों के आगे नृत्य करने लगती हैं
वे तसवीरें-
जो कभी रंग-बिरंगी होती हैं
कभी सतरंगी होती हैं
और कभी बेरंगी होती हैं
सतरंगी यादों की तसवीरें भी
हृदय को कचोटती हैं
हाय! वो दिन कहाँ गए
बेरंग अतीत भी तड़पाता है
हाय! वो दिल क्यों आये
अतीत को भुला पाना सम्भव भी नहीं
अतीत की कड़ी से कड़ी मिलती जाती है
तभी तो वर्तमान आता है
वही वर्तमान
भविष्य से जुड़कर अतीत बन जाता है
ये ही तीनों काल मानव के काल हो जाते हैं

अतीत की यादों की धुनों पर बजाए गए
सारे साज़ बेताल हो जाते हैं
अतीत के अपने
सपने में आ-आकर तड़पाते हैं
अतीत के सपने परछाइयाँ बनकर
दिन रात डराते हैं
अतीत की परछाइयाँ तसवीर बन जाती हैं
आँखें उनमें अटक कर
कहाँ-कहाँ भटक जाती हैं।

पागल दिल

करवटें बदलते
गुज़र गई ज़िन्दगी
सलवटें सुलझाते
उलझ गई ज़िन्दगी।

हर सुबह ज़िन्दगी में
एक आस भर गई
हर रात आकर
फिर निराश कर गई
कोई दिन शायद
कुछ नई आस लाये
क़दमों में अपने
ख़ुशी की सुवास लाये
आहटें सुनने को
निकल गई ज़िन्दगी।

दूर हुए अपने तो
जैसे थे सपने
शायद मिल जायें
बेगानों में अपने
दूर तक कहीं भी
न राह है न मंज़िल

ढूँढ रहा कोई ख़ुशी
मेरा यह पागल दिल
मुस्कराहटें देखने को
तरस गई ज़िन्दगी
करवटें बदलते
गुज़र गई ज़िन्दगी

भद्र पुरुष

बाग़ में टहल रहे थे
दो भद्र पुरुष
ज़रा देर में जाने क्या हुआ
दोनों के बीच जाने क्या बात हुई
दोनों के दिमाग़ की बिगड़ गई सुई
दोनों के क्रोध का
कोई न था ओर छोर
फूल झड़ते मुखों से
वचन झड़ रहे थे कठोर
एक ने कहा
मैं तेरे बाल खींचकर
तेरे हाथ में दे दूँगा
दूसरे ने कहा
मैं तेरी बत्तीसी तोड़कर
तेरे मुँह में भींच दूँगा
एक ने झट-पट विग उतारा
और चाँद आगे कर दी
ले खींच ले बाल।
आगे बढ़ जल्दी
दूसरे ने चौंक कर लगाया ठहाका
अच्छा
देता है मुझे धोखा
उसने भी बत्तीसी निकाली
और जेब में रख कर चिल्लाया
आ बढ़ आगे
एक भी दाँत तोड़ कर दिखा दे।

✷

बड़ी मुश्किल है

मान की अभिमान की चिन्ता किसे यहाँ
यहाँ तो प्राण बचाना भी बड़ी मुश्किल है
भूत की, भविष्य की चिन्ता किसे यहाँ
यहाँ तो वर्तमान बचाना भी बड़ी मुश्किल है
मुँह से एक शब्द भी न निकल जाये
उसके जाने क्या-क्या अर्थ निकल जायेंगे
कोई इच्छा न मन में आ जाये
उससे जाने कितने अनर्थ हो जायेंगे
सोचने से कुछ न होगा हासिल
डूबते जा रहे नहीं साहिल
सपनों के महल बनाने की चिन्ता किसे यहाँ
यहाँ तो ईमान बचाना भी बड़ी मुश्किल है
कोई अरमान अब नहीं मन में
न किसी लक्ष्य तक पहुँचना है
जो भी दिन बच गए हैं जीवन में
उनको ले साथ अब घिसटना है
ज़िन्दगी बर्फ़ बन गई अब तो
अब तो पलछिन उसे पिघलना है
खो गई राहें मंज़िलें हैं कहाँ
खो गए धरती गगन, खो गया सारा जहाँ
चाह की आराम की चिन्ता किसे यहाँ
यहाँ तो जान बचाना भी बड़ी मुश्किल है

सुलगते रिश्ते

कुछ बीते पलों को
न याद करना ही अच्छा है
कुछ रीते रिश्तों को
भुला देना ही अच्छा है
इन पुराने रिश्तों को
जितना कुरेदोगे
ये उतने ही उलझते जायेंगे
अधिक याद करोगे
तो अधिक तड़पायेंगे
जितना बचना चाहोगे
उतना सतायेंगे
ये रिश्ते सुलझते कम
उलझते अधिक हैं
ये रिश्ते बुझते कम
सुलगते अधिक हैं
ये उबलते हैं चहकते नहीं
उफ़नते हैं महकते नहीं
अजीब सी तासीर है इनकी
अजीब सी तक़दीर है इनकी
ये रिश्ते लटकते हैं
टूटते नहीं
इन रिश्तों में हम
ज़िन्दगी भर भटकते हैं
पर इनसे कभी

छूटते नहीं
अच्छा है
कुछ पलों के लिए ही सही
उन रिश्तों को भुला दो
जो थे, हैं और रहेंगे
जिनके बहाव में
हम हमेशा बहेंगे।

योगी

न अपने दुःख को साथी
बाहर की हवा देना
अपने दुःख दर्द को तुम
खुद अपनी दवा देना
सुख में तो सब साथ हैं
दुख में न होगा कोई
बस साथ अपना तुमको
न साथ देगा कोई
दुःख रखना मन के अन्दर
बाहर न आने देना
सुख की खुशी में सबको
तुम अपने साथ लेना
सुख-दुःख को सम समझकर
जब तुम स्वरूप लोगे
गीता के शब्दों में तुम
योगी का रूप लोगे

आरम्भ और अन्त

जीवन एक अन्तहीन चक्र है
अन्त ही प्रारम्भ है
और प्रारम्भ ही अन्त है
एक रचना शुरू होकर
अन्तिम चरण पर पहुँचकर
अपना एक नया रूप पा लेती है
और एक नई रचना के लिऐ
एक नवीन रूप को साकार करने के लिए
मार्ग प्रशस्त कर देती है।
एक का अन्त दूसरे का प्रारम्भ
एक का आरम्भ दूसरे का अन्त
इस चक्र का कोई सिरा नहीं
इस चक्र में ही मानव
निरन्तर घूमता रहता है
यह चक्र ही सृष्टि को चलाता है
एक लक्ष्य की पूर्ति के बाद
नये लक्ष्य की ओर जाने की प्रेरणा देता है
प्रायः जिसे हम प्रारम्भ करते हैं
वह अन्त की प्रतीक्षा का प्रारम्भ
और जिसे अन्त कहते हैं
वह एक नये प्रारम्भ की तैयारी है
आगमन ही समापन का
और समापन ही आगमन का संकेत है।

नेह दीप

दीप स्नेह का जले हमेशा
हम सबके अन्तर में
जैसे जलता पावन दीपक
देवों के मन्दिर में
पूजा अर्चन वंदन फीका
अगर दिलों में प्रेम नहीं
कर्मकाण्ड उपवास नहीं कुछ
जीवन में यदि प्रेम नहीं
जीवन चलता रहे हमेशा
नगर-नगर और डगर-डगर
भली डगर पर चलकर पहुँचे
सब जन अपनी मंज़िल पर
जले दीप से दीप स्नेह का
एक लड़ी बन जाये
तम से ले जाये प्रकाश में
सबको राह दिखाये।

प्रश्नचिन्ह

मेरी ज़िन्दगी
एक उलझा हुए प्रश्नचिन्ह है
ज़िन्दगी में क्या खोया
क्या पाया
कितना खोया
कितना पाया
इसकी गणना कभी नहीं हो पाई
जो नहीं किया वो करते तो क्या होता
जो किया वो न करते तो क्या होता
अगर मैंने खोया तो क्यों खोया
नहीं पाया तो क्यों नहीं पाया
जो लम्हे हाथों से खिसक गए
वो मेरे कितने अपने थे
जो पल ज़िन्दगी से निकल गए
उनमें कितने सपने थे
पर सबसे बड़ा सच अभी भी नहीं मिल पाया
क्या वो सपने भी मेरे अपने थे या नहीं
जो मेरे अपने थे
वो भी मेरे अपने थे या नहीं
कितने अनुत्तरित प्रश्न मेरे सामने हैं
यह कैसा अस्तित्वहीनता का अहसास है
सचमुच ही मेरी ज़िन्दगी
एक उलझा हुआ प्रश्नचिन्ह बनकर रह गई है।

✷

मुक्तिदाता

मेरे जीवन की संध्या में मुझको मिल जाना तुम भगवन
जो राह नहीं मिलती मुझको वह राह दिखाना तुम भगवन

तेरे मन्दिर के अन्दर भी
क्यों मेरा मन टिक पाता नहीं
तू सामने मेरे बैठा है
क्यों फिर भी तू दिख पाता नहीं

जो ज्योति नहीं मिलती मुझको वह ज्योति जगाना तुम भगवन

जीवन के पथ पर जब भी कभी
मेरे पग डगमग हो जायें
तेरे दीपक की ज्योति से
मेरे पथ जगमग हो जायें

मेरे पथ दर्शक तुम ही हो मेरे जगत्राता तुम भगवन

सूने जीवन की संध्या में
जब सारे बंधन खुल जायें
मेरी आँखों के अश्रु भी
जल बन आँखों से ढुल जायें

तुम मेरे बंधन बन जाना हे मुक्तिदाता मेरे भगवन
मेरे जीवन की संध्या में मुझको मिल जाना तुम भगवन

भूले फ़साने

ये बारिश के मौसम के कैसे तराने
कि दिल याद करता वो भूले फ़साने
वो साथी जो दिन रात करते थे बातें
वो दिन भी थे अपने और अपनी थीं रातें
सभी एक दूजे की सुनते सुनाते
कई नाम से दोस्तों को बुलाते
हर एक बात पर गूँज उठते थे गाने
कि दिल याद करता वो भूले फ़साने

हँसी और ठहाकों के गानों की महफ़िल
रहूँ आज भी उनकी यादों में ग़ाफ़िल
लगे मेरे पीछे वो यादों के साये
भला कैसे लौटेंगे वो दिन पुराने
कि दिल याद करता वो भूले फ़साने

जब मल्हार गाकर बुलाते थे बादल
जब काफ़ी में जुड़ जाते थे सुर बिलावल
वो भैरव में साथी सुरों को मिलाते
कभी भैरवी से हृदय को सजाते
वो गाने ही गाने किसी भी बहाने
कि दिल याद करता वो भूले फ़साने

मेरा मौन

आज मैं क्यों मौन हूँ ?
क्यों निराशा और आशा की घटायें,
मौन नर्तन कर रही हैं ?
शून्य से अन्तस् पटल पर
खिंच रहीं शत कोटि रेखा
किन्तु कितनी गहन हैं ये कौन जाने
कौन माने ?
क्यों अचानक इक शिकारी है बिछाता जाल आकर
और क्यों भोला मनुज जाता उलझ है
क्यों अविश्वासों में फँसकर एक मानव
दूसरे का शत्रु बन जाता यकायक
बहुत से ये प्रश्न आ जाते हैं जब-तब
और मुँह बाकर, मुझे आकर सताते
एक उत्तर घूम जाता है यही बस-
पूर्ण यदि हो जायें सबकी कामनाएँ
मान्यतायें न रहें कोई अधूरी
सृष्टि रसमय हो
रहे छाई सदा इक भृंग स्वर लय
और स्वयं ऋतुराज का साम्राज्य छा जाये धरा पर
दर्द पीड़ा का जगत में नाम न हो
यातनायें ख़त्म हो जायें सभी की
हाइड्रोजन और एटम बम्ब के युग से निकलकर
शान्ति के युग में पहुँच जाये जगत यदि
प्यार के वातावरण में मग्न हो जाये सकल जग

हो सरल विश्वास आपस में
रहें सद्भावनायें
प्रेम में पग जायें सारे विश्व के मानव सभी
गा उठूँगी झूमकर मैं
शून्य अन्तस् का उड़ेगा
दुःख चिन्ता की लक़ीरें
लुप्त हो मिट जायेंगी
तब मौन होगा-
भग्न मेरा ।

खुद की राह

खुद को कितनी बार पुकारा
खुद को ढूँढ सके न हम
टकराकर आवाज़ें लौटीं
जाने कहाँ हुए गुम हम
वीरानों में गूँज रही हैं
अब भी मेरी आवाज़ें
घर बाहर सब सन्नाटा है
बंद हैं सारे दरवाज़े
शून्य भरा है अन्तरतम में
दिल दिमाग़ में अँधियारा
आँखों में इक धुँआ-धुँआ सा
खोया सारा उजियारा
मेरा क्या अस्तित्व
कौन मैं
कहाँ किधर मेरी मंज़िल
बीच भँवर में नाव फँसी है
नज़रों से ओझल साहिल
दिशाहीन दिग्भ्रमित ठगी सी
देख रहा हूँ खुद की राह
बस खुद को पहचान सकूँ मैं
नहीं और है कोई चाह
प्रश्न हज़ारों खड़े सामने
कोई ख़ुशी न कोई ग़म
खुद को कितनी बार पुकारा
खुद को ढूँढ सके न हम।

✷

पुराने ज़ख़्म नये अफ़साने

जब भी उसने दिये नये ग़म
हमने अफ़साने लिख डाले
हमने अपने पुराने ज़ख़्मों से
कुछ नये फ़साने लिख डाले

हर विरह दे गया कुछ गीत
आहों से इक नई ग़ज़ल निकली
दिल में जब कभी धुँआ सा उठा
होठों से धुन नई मचल निकली

याद करके किसी को रोयें क्यों
क्यों न अब संगदिल बनें हम भी
बेवफ़ाई तो बहुत सही हमने
क्यों न खुद से वफ़ा करें हम भी

हमने अपने को बहलाने के लिए
अब तो अनगिन बहाने गढ़ डाले
हमने अपने पुराने ज़ख़्मों से
कुछ नये से फ़साने लिख डाले।

कभी तो आओ

कभी तो आओ
जब जी चाहे तब आ जाओ
चटक चाँदनी
कड़क दुपहरी
शाम लगे कुछ ठहरी-ठहरी
या हो जाये रात अँधेरी
छाये बदरिया गहरी-गहरी
खिल जाये जब धूप सुनहरी
चाहे जिस मौसम में आओ
कभी तो आओ
मन में हो आशा की किरणें
या निराश मन सूना-सूना
हो तनाव से ग्रस्त हृदय
मन कहे हाय अब कैसा जीना
मन में अनगिन प्रश्न छुपाये
अगर बना लो मुझको साथी
आकर बाँटो मन की बातें
तो आ जाओ
कभी तो आओ
कुछ तुम सुन लो
कुछ मुझे सुनाओ
सुख की दुःख की
गाथा गाओ
गहराये जब साँझ सांवली

और हवायें चलें बावली
तुम कुछ ऐसी रुत में आओ
आकर फिर जाने न पाओ
कभी तो आओ।

ज़िन्दगी और हादसे

हर हादसा
ज़िन्दगी को एक बार
तोड़ जाता है
हर रास्ता ज़िन्दगी को
एक नया मोड़ दे जाता है
हर क़दम पर कोई
मिलता या बिछड़ जाता है
हर नया दिन एक नई शाम
दे जाता है
हर नई सुबह
एक नई रात लेकर आती है
सपनों के हुजूमों में तन्हाइयाँ भर जाती हैं
कोई कितना ही संभलकर चले
ज़िंदगी न जाने कब
कहाँ छोड़ जाती है
कोई दुनिया से कितना ही हो
उदासीन न जाने कब
कैसे, किसी से जोड़ जाती है।

चल सखी

चल सखी उस देश को
हो न जहाँ कोई भी मीत
एक छोटी सी कुटी हो,
और हो सुनसान चहुँ दिशि
क्षुब्ध सा वातावरण हो
क्षुब्ध से हों प्रातः और निशि
एक मैं और मेरा दुःख हो
हो मेरा नीरव सा गीत

हर्ष न हो शोक न हो
राग न वैराग्य न हो
जीत न हो हार न हो
भाग्य न सौभाग्य न हो
शुष्क सा जीवन चले
और शुष्क हो उर का संगीत
चल सखी उस देश को
हो न जहाँ कोई भी मीत

आधार दे दो

मुक्ति की तो कामना अब है नहीं पर
जी सकूँ इतना तनिक आधार दे दो
क्या ख़ुशी क्या ग़म, सभी तो भूल बैठी
मैं लहर गिनती, नदी के कूल बैठी

स्नेह की, सम्मान की तो
कामना अब है नहीं पर
साँस भरकर ले सकूँ
इतना तनिक आधार दे दो

डूबते जाते हर इक पल
भाव मेरे इस लहर में
हाय! मैं जल जाऊँगी
कितनी जलन है इस ज़हर में

ज़िन्दगी की कामना तो
है नहीं पर
मौत के दिन गिन सकूँ
इतना तनिक आधार दे दो ।

अनदेखे बंधन

यह कौन सा नाता है
जो बाँध जाता है हमें
किसी विशेष व्यक्ति से
कौन सी अदृश्य डोर
जोड़ जाती है अन्तर को
अनजाने रिश्तों से
किसी विशेष व्यक्ति से
और मानव अनायास ही
खिंचता चला जाता है उसकी ओर
जैसे पूर्व जन्म के कुछ तार
उसे लपेटे चले जाते हैं
एक अनदेखे बंधन में
फिर आँखों के व्यवहार
और पूर्वजन्म के संस्कार
उसे भर देते हैं
एक अनोखी अनुभूति से
और अनजाने ही
उसके नैन भर जाते हैं
एक विशेष अभिव्यक्ति से
और मानव जुड़ जाता है
किसी विशेष व्यक्ति से।

मेरे अफ़साने

जब-जब उसने दिये नये ग़म
हमने बना लिये अफ़साने
ओढ़ी एक नई सी चूनर
सी कर अपने ज़ख़्म पुराने

आठों पहर हँसी होठों पर
लिये घूमते सबके आगे
दर्द दिखे न कहीं किसी को
हँसने के ढूँढते बहाने

नहीं चाह हमदर्दी की है
नहीं हमें हमदर्द चाहिए
इस दिल के बहलाने को तो
रोज़ नया इक दर्द चाहिए

यही दर्द मेरा जीवन है
यही दर्द मेरा स्वप्न है
यही दर्द नग़मे ग़ज़लें हैं
यही दर्द मेरे अफ़साने।

साधना और साध्य

मैं तुम्हारे शब्द बन जाऊँ
बनो तुम गीत मेरे
मैं तुम्हारी प्रीत बन जाऊँ
बनो तुम मीत मेरे
मैं तुम्हारी रागिनी हूँ
प्रिय बनो तुम राग मेरे
मैं तुम्हारे गीत की धुन
प्रिय बनो अनुराग मेरे
मैं तुम्हारी शांति बन जाऊँ
बनो सुख सार मेरे
मैं मधुर संगीत बन जाऊँ
बनो तुम प्यार मेरे
मैं भटकती बूँद हूँ
प्रिय तुम बनो आधार मेरे
एक एकाकार हो जायें
बनो संसार मेरे
मैं बनूँ आराधना
बन जाओ तुम आराध्य मेरे
मैं बनूँगी साधना
प्रिय साध्य तुम बन जाओ मेरे।

एक नई दुनिया

क्षितिज के उस पार जाकर
इक नई दुनिया बसाकर
भूल जायें ग़म वो सारे
जो दिये हमको जहाँ ने

बादलों के बीच छिपकर
आज हँसलें वो हँसी
जो छीन ली हमसे जहाँ ने

जाऊँ छुप जाऊँ कहीं मैं
गहन जंगल की गुफ़ा में
डूब जाऊँ एक अनहद सी ख़ुशी में
जो मिली तेरी वफ़ा में

ओट में झुरमुट की जाकर
आज जी लें वो समय
छीना जो हमसे इस जहाँ ने

या नदी के पास जाकर
नाच लूँ लहरों की धुन पर
गुनगुनाऊँ गीत झूमे
सृष्टि सारी जिन्हें सुनकर

छेड़ मन वीणा की तारें
आज गालें गीत सारे
छीने जो हमसे जहाँ ने
भूल जायें ग़म वो सारे
जो दिये हमको जहाँ ने।

नियति का संत्रास

दुनिया के मेले में
अकेले होना
एक अजीब से दर्द का अहसास है
एक ऐसे इन्सान का नसीब
ख़ुशी जिसके दूर है न पास है
नज़रों का खालीपन
दूर-दूर तक दिखाई देता अँधेरा
सब रंग गायब हैं
कोई लाल है न सुनहरा
सूरज चाँद सितारे
किसी में कोई चमक नहीं
फूलों से भरे गुलशन में
कोई महक नहीं
ऐसे में चारों तरफ़
लोगों का हुजूम
ऐसे में अकेलेपन में
हो जाना गुम
यह भी नियति का
कैसा संत्रास है
यही अकेलापन
सलीब पर चढ़ने का
अहसास है।

छात्रावास में एक दिन

आज मैंने ज़िन्दगी देखी
हँसती-खिलखिलाती महकती ज़िन्दगी
गाती गुनगुनाती बहकती ज़िन्दगी
ज़िन्दगी की राहों में बढ़ने की
मंज़िल को छूने की
सपनों को पूरा करने के
संघर्षों में लगी ज़िन्दगी
दिन और रात के अहसास को भूलकर
जीवन में उजाले ही उजाले
खुशियाँ ही खुशियाँ समेट लेने की
ऊँची से ऊँची ऊँचाइयाँ छू लेने को
आतुर ज़िन्दगी
अपने पराये
तेरे मेरे
इसके उसके जैसे शब्दों से परे
हम सब एक हैं
हम सबके दर्द एक हैं
हम सबकी खुशियाँ एक हैं
हम सबके ग़म एक हैं
ऊँचे आदर्शों की ज़िन्दगी
यही है हम बीते हुए लोगों के
वर्तमान और भविष्य की ज़िन्दगी
यही है हम कल के लोगों के
आज और आने वाले कल की ज़िन्दगी।

✷

गहन कुहास

एक टूटा तार है यह ज़िन्दगी
छूटता आधार है यह ज़िन्दगी
जी रहे किसके लिए, क्यों कर जियें
एक गहन कुहास है यह ज़िन्दगी
क्षुद्र तृण का आसरा ले चल रहे
एक झूठी आस है यह ज़िन्दगी
है भरोसा कौन से मनमीत का
टूटता विश्वास है यह ज़िन्दगी
एक भी अरमाँ न पूरा हो सका
एक अनबुझ प्यास है यह ज़िन्दगी
जीना है यूँ ही जिये जाते हैं हम
आती जाती साँस है यह ज़िन्दगी।

अब झंझावात लिये आना

ओ मेरे प्रिय बन्धु अगर अब मेरे जीवन में आना
तो झंझावात लिये आना, मत मलयवात लेकर आना

सुख के सपने तो अब न रहे
जो थे अपने वे अब न रहे
सब लुटा कल्पनायें टूटीं
क्यों बुनूँ व्यर्थ ताना-बाना
अब झंझावात लिये आना

नैनों का सब जल रीत गया
उल्लास हास सब बीत गया
अब तो है कुछ भी शेष नहीं
कैसा सुख का आना जाना
अब झंझावात लिये आना

निष्ठुर आघातों को सहकर
यह हृदय बन गया है पत्थर
अब व्यथा कथा ही शेष रही
दुःख में है सुख मैंने जाना
अब झंझावात लिये आना
मत मलयवात लेकर आना।

भावों की छवि

मैंने कुछ लम्हों को
इस चित्र में उकेरा है
मैंने कुछ भावों की छवि बनाई है
मैंने हृदय का रक्त
इस चित्र में बिखेरा है
तुम देखो तो
यह कृति किसी कवि ने बनाई है
शायद तुम समझ जाओ
अन्तस् की भाषा को
चित्र बनकर
जो तुम्हारे सामने बिखरी है
एक-एक रेखा
जो रक्त से लिखी गई
हाथों की लक़ीरों सी
कैनवास पर उभरी है
शायद मेरा रक्त
सतरंगा इन्द्रधनुष बन जाये
मन की किताब को
रंगों में लिख जाये
जिये गये पल
अनुभूतियाँ और संवेदनायें
भावनाओं की अभिव्यक्ति
रंगों में बिखरी है
उठा कर पलक

देख लो झलक
मैंने अपना सम्पूर्ण अस्तित्व
इस चित्र में उकेरा है
मैंने कुछ लम्हों को
इस चित्र में उकेरा है।

कैसे-कैसे नेता

कैसे-कैसे नेता आकर
राजनीति का खेल खेल
कहीं रेल पर नाव चल रही
कहीं नाव पर चलती रेल

वोट बैंक है कोई बनाता
वोटों का लेना देना
नोट बैंक है कोई चलाता
नोट छापना और गिनना

भूल जाओ लाखों की बातें
बातें करो करोड़ों की
वोट नोट सब बढ़ें अनगिनत
बातें करो न थोड़ों की

चढ़ जायें हम आसमान पर
दे दो इक ऐसी सीढ़ी
धन दौलत इतनी आ जाये
बैठ खायें नौ दस पीढ़ी

कुर्सी में हम ऐसे चिपके
कभी न वो हमसे छूटे
चिन्ता एक हमें कुर्सी की
देश राज कोई लूटे

हमको क्या लेना-देना है
कोई जिये या कोई मरे
फल तो पाते हैं सब उसका
जैसे जिसने कर्म करे

सच कहते हैं नेता जी
सद्कर्म उन्होंने किये बड़े
सातों सुख मिलते हैं उनको
अगर जेल में कभी पड़े

सद्बुद्धि और राजनीति का
दूर-दूर तक कहीं न मेल
कैसे-कैसे नेता आकर
राजनीति का खेलें खेल।

✷

थोड़ा सा अधिकार

क्या मुझे अधिकार इतना दे सकोगे
याद तुमको कर सकूँ जब हृदय चाहे

माँगना तो स्नेह का अपमान ही है
बात क्या आदान या प्रतिदान की है?
किंतु अपना समझकर कुछ दो मुझे तुम
ज़िन्दगी का एक यह अरमान ही है

क्या मुझे आधार इतना दे सकोगे ?
स्वप्न में देखूँ तुम्हें जब नैन चाहें।

दूर से देखूँ तुम्हें तो छिप न जाना
ज़िन्दगी को चाहिए कोई बहाना
नेह के नाते बड़े होते कठिन हैं
तथ्य क्या जाने भला ज़ालिम ज़माना

क्या मुझे अधिकार इतना दे सकोगे ?
समझ लूँ अपना तुम्हें जब हृदय चाहे।

भोर का दिया

मैं अकेला ही जलता रहा रात भर
जानता हूँ जलूँगा यूँ ही उम्र भर
रात भर याद करता हूँ बीते ज़माने
ख़ुशी के तराने ग़मों के फ़साने
वो तारों के डोले में चंदा का आना
वो होठों पे मेरे उनींदा तराना
अकेला ही जलता हूँ ख़ामोशियों में
कोई कुछ न कहता है सरगोशियों में
न मेरे हैं अरमान न कोई सपने
हैं मेरे लिए तो सभी लोग अपने
करें रात भर क्या सभी देखता हूँ
मैं सपने सुनहरे कभी बेचता हूँ
मैं चुप रहके देखूँ ये फितरत है मेरी
मैं दिया भोर का बुझना क़िस्मत है मेरी

आती जाती साँसें

ये चलती फिरतीं लाशें
बहुत कुछ कहती हैं
ये आती जाती साँसें
बहुत कुछ सहती हैं
सिर्फ़ साँसों का आना-जाना ही
जीवन की पहचान है
चलते हुए पैर
खुली आँखें
बताती हैं
यह भी इन्सान है
रुकी हुई सोच
मरा हुआ दिल
आँखों में भरा शून्य
दिल से निकलता हाहाकार
सूने दिल और सूनी आँखों से
निकलता मौन चीत्कार
अन्तर का क्रन्दन
सूखी आँखों का
अनभीगा रुदन
कोई नहीं सुन पाता
इस रुदन और क्रन्दन की गंगा
अन्दर की तरफ़ बहती है
ये लाशें
जीने के सारे कर्त्तव्य पूरे करती हैं

हँसती हैं, रोती हैं, काम करती हैं
और जीवन के लक्ष्य भी पूरे करती हैं
जीवन में मरण में
काम करती हैं पूरे तन से
दुःख में दुःखी दिखती हैं
सुख में नाचती हैं
कभी-कभी मन्दिर में जाकर
कथा भी बाँचती हैं
ये दुनिया में न रहते हुए भी
दुनिया में रहती हैं
ये चलती फिरती लाशें
बहुत कुछ कहती हैं।

आशीष

क्या तुम्हें याद है
जब तुम मेरी ऊँगलियाँ पकड़कर
डगमग-डगमग पग धर कर
ठुमक-ठुमक कर चलते थे
तुम्हारी उस चाल पर मैं निहाल हो जाती थी
तुम सौ बार गिरते थे मैं सौ बार उठाती थी
न-
तुम्हें उठाने में, तुम्हारे पीछे भागने में
तुम्हारे साथ लुका छिपाई खेलने में
तुम्हारी गेंद उठा-उठा कर लाने में
मेरे घुटनों ने, मेरे पैरों ने, मेरे हाथों ने
कभी दर्द महसूस नहीं किया
तुम्हें एक-एक शब्द सिखाने के लिये
मैं निरन्तर बोलती थी
तुम्हारे मुख से एक शब्द सुनने के लिए
मेरे कानों की एक-एक नस तरसती थी
तुम्हें पेट भर खिलाने के लिये
मैं एक-एक ग्रास के लिए
एक-एक कहानी सुनाती थी
एक-एक चम्मच दूध के लिए
हज़ार तरक़ीबें अपनाती थी
फिर तुमने पढ़ना शुरू किया
मैंने सारे देवी देवताओं को मनाया
उन्हें अपने दिल का हाल सुनाया

कितने व्रत उपवास किये तुम्हारी सफ़लता के लिये
कितनी आराधना की तुम्हारी उच्चता के लिये
आज ईश्वर ने मेरी प्रार्थनाओं का दिया सिला
अब मुझे ज़िन्दगी से या ईश्वर से कोई नहीं गिला
जानती हूँ जितना वह देता है
उतना ही भाग्य का लेखा है
भाग्य से अधिक मिलता किसने देखा है
जो मिला बहुत मिला यह जीवन भर का अर्जन है
एक बात सदैव याद रखना संतोष ही परम धन है
जो मिला है सदैव बना रहे
यही आशीष है अगली पीढ़ी के लिये
नींव का पत्थर तो सदैव प्रसन्न रहता है नीचे
ऊँची उठती सीढ़ी के लिये।

मित्रता

प्रश्न किया साथी ने
मित्रता क्या है
मैंने कहा-
मित्रता वह दौलत है
जिसे पा लेने पर ग़रीब
ग़रीब नहीं रहता
अमीर और अमीर बन जाता है
उसके निःस्वार्थ स्नेह से
सिर गर्व से तन जाता है
अकेला होने पर भी
अकेलापन निगलता नहीं
किसी अनचीन्हे भय से
हृदय पल-पल पिघलता नहीं
हर अँधेरे क्षण में
सच्ची मित्रता
सूरज की तरह प्रकाश देती है
पग-पग पर बाधाएँ हटाकर
विस्तृत आकाश देती है
मित्रता लेन-देन और दिखावा नहीं होती
मित्रता स्तर और पद का चढ़ावा नहीं होती
मित्रता है सद्भाव और संवेदन
मित्रता है निःस्वार्थ प्रेम
और भावों का संतुलन
साथी ने धीरे से

मेरे हाथ पर हाथ रखा
मैंने स्नेह से दबाया
हाथ ने हाथ की भाषा पढ़ी
आपसी विश्वास और
समर्पण को परखा
हृदय तक पहुँचाया
साथी भावावेग में मुस्कुराया
फिर चिल्लाया
हाँ मित्र
यही मित्रता है।

सपने

इतनी निराशा भी अच्छी नहीं
कि सपने देखना ही छोड़ दो
जीवन इतना पराया भी नहीं
कि उसे यूँ ही तोड़ दो
सपनों में ही तो छुपा होता है एक लक्ष्य
सपने खो जायेंगे तो लक्ष्य भी खो जायेंगे
जीवन को पूर्ण बनाने के लिए
सपनों को पूर्ण बनाओ
सोते में जो सोचा
जागते में उसे पाओ
दुनिया कितनी ही बदल जाये
चाहे अपने भी दूर हो जायें
दिल में बसाये अरमान
पल में चूर-चूर हो जायें
जब सब कुछ निस्सार
और झूठा हो जाता है
तब भी सपने सच्चे साथी की तरह
रातों में आते हैं
कुछ ही पल के लिये सही
पलकों को सजाते हैं
पलकों में आये उन पलों से
सजा लो जीवन की राहों को
सपनों में जो आये थे
थाम लो उनकी बाहों को

लक्ष्य की ओर जाने वाली राहों को
अपनी तरफ़ मोड़ दो
स्वप्न और सत्य को
जीवन से जोड़ दो
इतनी निराशा भी अच्छी नहीं
कि सपने देखना ही छोड़ दो।

स्वर्ग और नर्क

एक दिन
हृदय में उठा एक प्रश्न
क्यों कोई दुःखी है
कोई प्रसन्न
क्यों किसी के लिए संसार असार है
किसी के लिए यहाँ
ख़ुशियों का पारावार है
कहते हैं
यहीं पर हैं
स्वर्ग और नर्क
उचित लगा मन को
वक्ता का तर्क
मानव के आगे-पीछे, दायें-बायें
सब तरफ़ इच्छायें ही इच्छायें
जब इच्छा पूरी हो जाती है
दृष्टि पथ पर सूरज-चाँद-सितारों से
जगमगा उठता है
हृदय-
सतरंगी इन्द्रधनुष पर झूलकर
आकाश तक पहुँच जाता है
धरती स्वर्ग बन जाती है
और जब
मन चाही इच्छा पूरी नहीं होती
आत्मा दिनरात है रोती

चारों ओर से
घेर लेते हैं अँधेरे
सूने लगते हैं
शाम और सवेरे
शून्य सिर्फ़ शून्य भर जाता है
सूरज से आग बरसती है
चाँद रोता नज़र आता है
दुःख की आग
आत्मा को जलाती है
और धरती-
नर्क बन जाती है।

सदियाँ और पल

कभी सदियाँ पल बन जाती हैं
कभी लम्हे सदियाँ बन जाते हैं
यूँ ही पल-पल, लम्हा-लम्हा
ज़िन्दगी के दिन निकल जाते हैं
इन्सान की सोच भी कितनी अजीब है
जो है सबके दूर वही सबसे क़रीब है
उसके साथ बिताये बरस
पल में कट जाते हैं
उसकी यादों में नैन
बरस-बरस जाते हैं
उससे दूरी का एक-एक पल
बरस बन जाता है
उसके बिना जीना
नरक बन जाता है
उसका ज़िन्दगी से यूँ चले जाना
दिल को चीर जाता है
उसकी याद का एक-एक लम्हा
सदा बन जाता है।

यादों की पुण्य धरोहर

मैंने घबरा कर तोड़ दिये
यादों के कुछ मीठे सपने
कैसें उनको अब याद करूँ
अपने जो बन बैठे सपने
जिनके चरणों की छाँव तले
बीता करता था यह जीवन
जिनके शुभ वचनों को सुनकर
पावन हो जाता था तन-मन
जिनकी शिक्षा पर आज तलक
चलती हूँ मैं जीने के लिये
जिनके शब्दों के अमृत को
तरसूँ मैं नित पीने के लिये
वह स्वर्ग सदृश प्यारा जीवन
बन गया धरोहर यादों की
मेरे अपने मेरे सपने
सब बने धरोहर यादों की
जब कभी याद आ जाते हैं
मैं घबराकर रो देती हूँ
यादों की पुण्य धरोहर को
अन्तर में रख रो लेती हूँ।

एक दिया

माँ-बेटी
रोज़ आती हैं
सुबह से शाम तक
बर्तन सफ़ाई करके चली जाती हैं
दोनों के पतियों के मुँह में शराब
इनकी आँखों में में पानी है
दोनों की माँग में सिन्दूर
माथे पर बिन्दी है
पर इनके पतियों का
धर्म और ईमान चिन्दी-चिन्दी है
बाहर इनका पसीना बहता है
मेहनत के काम से
घर में इनका खून बहता है
पतियों की मार से
ये प्यार के लिये चीज़ें खरीदती हैं
पति शराब के लिये उन्हें बेचते हैं
खुद भूखी रह कर
पति और बच्चों का पेट भरने वाली
इन औरतों की तरफ़
भगवान भी नहीं देखते हैं
कैसा है यह क़िस्मत का लिखने वाला
जिसने माँ बेटी की क़िस्मत को
एक ही कलम से लिख दिया
क्यों भरे इनके भाग्य में सिर्फ़ अँधेरे
क्यों नहीं दिया-
एक दिया।

भुला दो

बुला लो पास अपने सुखद आशा के सवेरों को
भुला दो दिल से अपने दुःख निराशा के अँधेरों को
नहीं संसार में दुःख की कमी, पर सुख भी आता है
मगर मिलता है सुख उसको जो दुःख को जीत पाता है
कहीं नदियाँ कहीं पर्वत कहीं काँटे हैं राहों में
झुका लो सबको पैरों पर सफ़लता भर लो बाहों में
न भय को पास आने दो, न डर को तुम जगह देना
अमावस हो जहाँ छाई वहाँ रोशन सुबह देना
मिटा तन-मन की निर्धनता भरो जग में उजाला तुम
जो भटके मंज़िलों से उनको मंज़िल से मिलाना तुम
न आने पास देना दुःख-दुराशा के लुटेरों को
भुला दो दिल से अपने
निराशा के अँधेरों को

एक बार फिर से

एक बार फिर से
घुल गई मधुर सुवास साँसों में
हृदय धड़कने लगा
किसी नई सुबह की आस में
साँस-साँस गीत बनी
मन और मस्तिष्क में
कुछ नये स्वप्न जाग रहे
कुछ नया करने के
जाल हृदय बुन रहा
लगता है ज़िन्दगी
मुझे फिर से बुला रही है
फट रही है काई सी
भाग्य पर पड़ी कुहास
झाँक रही धुंधलके से
उजली किरण सूरज की
प्रस्फुटित हो रही
इक नई उजास
गूँज रहा हवाओं में
कुछ संगीत सा
घटाओं में बज रहे नगाड़े
मचलती बिजलियाँ
शहनाइयों के सुर जैसी
सब तरफ़ छा रहा
इक नशा अजीब सा

भर रहा सतरंगा इन्द्रधनुष
हृदय में उल्लास
सब कुछ बदला सा है
या बदल गई है दृष्टि मेरी
लगता है ज़िन्दगी
मुझे फिर से बुला रही है।

✷

खुद को बदलना होगा

ख़ुद को बदलने के लिए हमें
बदलना होगा अपने नज़रिये को
सबको अपना बनाने के लिये
ढूँढना होगा एक ज़रिये को
ज़रिया मिलेगा हमें
अपने व्यवहार से
दुनिया को जीत लेंगे हम प्यार से
सबको समझने के लिये
खुद को समझना होगा
औरों को बदलने से पहले
खुद को बदलना होगा
अपनी कमज़ोरियों से
पहले तो निकलना होगा
दिल से दिल तक राह बनाकर
सीधी राहों पर चलना होगा
जीत कर खुद को हम
दुनिया को जीत सकते हैं
जीतते हैं वही
जो दुनिया से प्रीत करते हैं
हमें लोगों के बीच
पुल बनाने हैं, दीवारें नहीं
हमें दुनिया के
अँधेरे मिटाने हैं, उजियारे नहीं

✷

विश्वास करो

माना कि रात बहुत लम्बी है
पर सुबह ज़रूर आयेगी
विश्वास करो
समय का चक्र चलता रहता है
अपनी चाल से
कभी हम सुखी हैं कभी दुखी हैं
अपने हाल से
दुःख की राते बड़ी काली और
अँधेरी होती हैं
पर रात जितनी काली
सुबह उतनी सुनहरी होती है
किरच-किरच रोशनी को इकट्ठा करके
एक नये सूरज का निर्माण करो
तुम्हारा आकाश जगमगायेगा
विश्वास करो
ज़िन्दगी में भूलें भी होती हैं, विश्वासघात भी
पग-पग पर बाधायें आती हैं, मिलते हैं आघात भी
कितना ही बचा कर चलो
दामन काँटों में उलझ जाता है
पर वक़्त के साथ हर मसला सुलझ जाता है
रात के काले अँधेरे को चीर कर
सूरज की पहली किरण आयेगी
तुम्हारे भाग्य गगन को चमकायेगी
विश्वास करो।

दिलों को दिलों से जोड़ दो

मेरे दोस्त
हर बात में मोल-तोल करना छोड़ दो
हर बात की पोल खोजना छोड़ दो
दिलों के सौदे तो दिल से ही किये जाते हैं
दिलों के बीच दिमाग़ को लाना छोड़ दो
दिलों के व्यापार में नफ़ा नुकसान नहीं सोचा जाता
ऐसे विचारों को दिल में लाना छोड़ दो
दिल की बातें मुखौटे लगाकर नहीं होतीं
उल्टी छुरियाँ चलाना छोड़ दो
मेरे दोस्त
दिल बड़ी नाज़ुक चीज़ होती है
उचित नहीं कि जब चाहो तोड़ दो
अब तो मान जाओ इल्तिजा मेरी
सोच को अच्छाई की तरफ़ मोड़ दो
बात यह मुश्किल नज़र आती है अगर
तो दिल की बातें करना छोड़ दो
फिर भी आख़िरी सलाह है ये मेरी
अच्छा हो कि दिलों को दिलों से जोड़ दो।

विभिषिका युद्ध की

हो सके तो टाल दो
विभीषिका युद्ध की
अच्छा हो कि अपना लो
अहिंसा बुद्ध की
युद्ध हल नहीं है
किसी समस्या का
युद्ध तो दुःखद अंत है
सारी तपस्या का
युद्ध के दिये घाव
बरसों बरस सताते हैं
औरतों को विधवा
बच्चों को यतीम बनाते हैं
बूढ़े माँ बाप का सहारा छिन जाता है
परिवार के जीने का बहाना छिन जाता है
ज़मीन से आसमान तक आग सी जग जाती है
देशों की तरक़्क़ी जिसमें जल जाती है
आने वाली पीढ़ियाँ भी उस आग को सहती हैं
क्या किया पूर्वजों ने रो-रोकर कहती हैं
भूल गये क्या हम हीरोशिमा नागासाकी
वो सब क्या कम था क्या अभी और भी है बाक़ी
क्यों नहीं अपनाते भावनायें शुद्ध सी
हो सके तो टाल दो विभीषिका युद्ध की।

ताक़तवर का कर्त्तव्य

ये मुस्कुराते चेहरों पर
किसने खींच दी है
भय और चिन्ता की लक़ीरें
आतंक से विस्फ़ारित आँखें
अहसास दिला रही हैं
शमशान में जलती चिता को देखने का
हर दिल धड़क रहा है
किसी अनहोनी के डर से
हर आँख जागती आँखों से
देख रही है भयंकर सपने
पता नहीं कब बिछड़ जायेंगे कोई अपने
यह युद्ध किसको क्या देगा
कोई नहीं जानता
यह कितनी बड़ी त्रासदी है
कि अपनी ग़लती कोई नहीं मानता
युद्ध किसी समस्या का हल नहीं होता
फिर भी समस्या को सुलझाने की पहल
कोई क्यों नहीं करता
यह जलता हुआ वर्तमान
खण्डहरों में बदलता भविष्य
मरता अपंग होता हुआ इन्सान
क्या यही है ताक़तवर का कर्त्तव्य।

अन्याय सहना पाप है

जिसकी लाठी उसकी भैंस
बहुत सुना है यह मुहावरा
पर भैंस को कब अकल आयेगी
उतार दे अपनी आँखों से चश्मा हरा
हरी घास की जगह चबा डाले लाठी को
क्यों शर्मसार करती है अपनी क़दकाठी को
कोई एक लाठी ले दुनिया को हाँक दे
जब चाहे किसी के भी घर में झाँक ले
यह तो बड़े अन्याय की बात है
गीता में भगवान ने भी कहा है
अन्याय सहना पाप है।

बिना नींव के महल

बन्धु मेरे
सपनों के महल बनाना छोड़ दो
सपनों की दिशा
किसी और तरफ़ मोड़ दो
ये सपने कभी साकार नहीं ले पायेंगे
बिना नींव के महल
कभी आकार नहीं हो पायेंगे
सपनों की दुनिया
बड़ी अजीब होती है
हड़बड़ा कर आँख खुल जाती है
जब मंज़िल बिल्कुल क़रीब होती है
जितना दम है पंखों में
उतनी ही उड़ान भरो
वक़्त की मचलती चालों की
पहचान करो
सपनों और हक़ीक़त में
बहुत अन्तर होता है
सपनों के टूटने से
ज़हर का सा असर होता है
बन्धु मेरे
सपने शत्रु हैं मित्र नहीं
सपने अनगढ़ लक़ीरें हैं
चित्र नहीं ।

✳

काश ! हमने सोचा होता

काश !
कभी हमने सोचा होता
जो हम करते हैं वो क्यों करते हैं
क्यों हम अपने कर्मों के कारण
बिना मौत मरते हैं
अगर हम ख़ुद को समझ जायें
तो दुनिया को समझने की
ज़रूरत ही न रह जाये
जब हम दुनिया को भूलने की
नाकाम कोशिश करते हैं
तब हम सबसे ज़ियादा
अपने आपको भूलते हैं
काश ! हम ख़ुद को
खुली किताब की तरह पढ़ पायें
तो हम अपनी कल्पनाओं का
एक सुन्दर आकार गढ़ पायेंगे
क्यों हम ख़ुद को उलझा लेते हैं
उलझे हुए बालों की तरह
क्यों हम ख़ुद में सिमट जाते हैं
अनसुलझे सवालों की तरह
काश ! हम सामना करें
उन मुश्किलों का जिनसे हम डरते हैं
क्यों हम कायरों की तरह
रोज़ एक मौत मरते हैं।

✷

कितनी ज़िन्दगियाँ

बहुत बार मन में
एक सवाल उठता है
यह ज़िन्दगी क्या है
ज़िन्दगी क्या सिर्फ़ एक नाम है
नाम है सिर्फ़ एक ज़िन्दगी
पर इस एक ज़िन्दगी में
इन्सान कितनी ज़िन्दगियाँ जी लेता है
कभी ख़ुशी कभी छलकते
जाम पीने वाली ज़िन्दगी
कभी दर्द से मचलते
आँसू पीने वाली ज़िन्दगी
कभी मिलन का सुख
कभी विरह का दुःख
कभी सहने का दुःख
कभी न सह पाने का दुःख
कभी ख़ुशी भरे क़हक़हों से
निकलते आँसू
कभी दिल की किरचियों से
टपकते आँसू
ज़िन्दगी के कैसे-कैसे
इन्द्रधनुषी रंग हैं
कैसे इन्सान एक ज़िन्दगी में
इतने चेहरे बदल लेता है
शायद इन्सान एक ज़िन्दगी में

कई ज़िन्दगियाँ जीता है
हर चेहरा अपने आप में
एक पूरी ज़िन्दगी जीता है।

बूढ़ी डाल का सूखा पत्ता

अतीत के एक प्राचीन वृक्ष की
एक बूढ़ी डाल पर लटकता
एक कमज़ोर सूखा पत्ता हूँ मैं
एक दिन न जाने किस देश से
हवा का एक तेज़ झोंका आयेगा
और मुझे उड़ाकर ले जायेगा
दूर बहुत दूर न जाने कहाँ
कोई नहीं पहुँच पायेगा वहाँ
मैं अकेला ही उसके साथ जाऊँगा
लौटकर कभी फिर नहीं आऊँगा
भूत भविष्य वर्तमान
सुख दुःख के तूफ़ान
अपनी पहचान
झूठ सच के साये
अपने पराये
सबको छोड़
एक अज्ञात पथ पर मुड़ जाऊँगा
दूर बहुत दूर उड़ जाऊँगा
एक विस्तृत आकाश में
एक ज्योति शिखा की आस में ।

आग की अभिव्यक्ति

जब नेत्र और श्रवण
बाहर की अग्नि को
हृदय और मस्तिष्क तक पहुँचा देते हैं
हृदय में प्रेम घृणा विश्वास अविश्वास
मानवीय संवेदनाओं का उच्छ्वास
लेने लगता है हिलोरें
कल्पनाओं का क़ाफ़िला
भावनाओं का सिलसिला
बन जाता है आग का दरिया
इस आग की अभिव्यक्ति के लिए
कविता बन जाती है ज़रिया
बह निकलती है हृदय की आँखें
कवि के शब्दों में
ढल जाती हैं हृदय की आहें
कवि के पदों में
जन्म होता है कविता का
कवि के छन्दों में।

मरे हुए दिल

कैसे कभी-कभी इन्सान
मर कर भी सारे काम करता रहता है
चुप-चुप रहकर
कितने दर्द कितने आँसू पीकर
घृणा और अपमान सहकर
बिना किसी प्रतिकार के
सब कुछ स्वीकार के
घर बाहर के सारे कर्त्तव्य
एक बेजान कठपुतली की तरह
पूरे करता जाता है
आँखों में छाई वीरानी के साथ
होठों पर एक इंच मुसकान भी दिखाता है
ख़ुद मरा हुआ होकर भी
औरों को जीने का पाठ पढ़ाता है
औरों की ख़ुशी के लिए
ख़ुद को रोज़ सूली पर चढ़ाता है
मरे हुए दिल को
चलते-फिरते शरीर में छिपाकर
रोज़ एक ज़िन्दा मौत मर जाता है
दुनिया चलती रहती है
बिना किसी शिकवे शिक़ायत के
दाग़ दिल पर पड़ते रहते हैं
दुनिया की इनायत के
अन्दर के दाग़ और अन्दर की आग के साथ

रोज़ चलता रहता है
बिना किसी ईंधन या माचिस के
एक ज़िन्दा आदमी
रोज़ जलता रहता है।

कहाँ मेरा साहिल

कहाँ खो गये मेरे साज़ों के राग
कहाँ खो गई मेरे दिल की आवाज़
कहाँ खो गई मेरी मंज़िल की राहें
कहाँ ताकतीं मेरी खाली निगाहें
कहाँ जाके टूटेंगे साँसों के तार
कहाँ से मैं लाऊँ दो साँसें उधार
कहाँ मेरा साहिल कहाँ है किनारा
कहाँ बैठकर साँस ले दिल बिचारा
कहाँ से ये आकर भँवर मुझको घेरे
कहाँ जाके खोये वो सपने सुनहरे
कहाँ तक छुपाऊँ मैं दिल के ये राज़
कोई आके पूछे तो मन की मुराद।

एक दिन और बीत गया

एक-एक कर
बीतते चले जाते दिनों में से
एक दिन और बीत गया
अँधेरा गया उजाला आया
उजाला गया अँधेरा आया
अँधेरे और उजाले का ख़ज़ाना
समय की चाल में रीत गया
सुबह-सवेरे दूर क्षितिज से
उछल कर बाहर आया
एक लाल आग का गोला
सात घोड़ों के रथ पर बैठकर
दिन भर पूरब से पश्चिम तक डोला
सूरज बढ़ा फिर ढला
अपनी किरणों को समेटकर
दूर सागर में कूदने को चला
डूबते सूरज के रंग-बिरंगे
बादलों में से निकली
संध्या सुन्दरी मनचली
सतरंगी चूनर के आँचल की ओट में
छिपाकर लाई एक दिया
और मेरे सूने अँधेरे घर में
बड़े जतन से लाकर रख दिया
अँधेरे और उजाले के खेल में
पता नहीं कब कौन हारा, कब कौन जीत गया
हाँ ! एक दिन और बीत गया।

✷

सीख ले

सीख ले हार से
वक़्त की मार से
बहुत कुछ सिखाती हैं
दुख भरी घड़ियाँ
जब क़िस्मत पर पड़ती हैं
वक़्त की छड़ियाँ
जीत का सुख तो
पल भर का होता है
कुछ क्षण नाचगाकर
हर दिन रोज़ सा होता है
पर हार का वार बड़ा तीखा होता है
जाने क्यों हार ने यह वार सीखा होता है
आठों पहर पड़ते हैं हथौड़े
दिल और दिमाग़ पर
लगता है पीते हैं
हर पल कड़वा ज़हर
ऐसे में करने को
बहुत कुछ होता है
जो संघर्ष से घबरा जाता है
वह जीवन भर रोता है
हार ही सिखाती है
जीवन संघर्ष
हार को जीत कर ही
मिलता उत्कर्ष।

दूसरों का पहरा

जब हम अकेले होते हैं
वास्तव में तब हम अकेले नहीं होते
क्योंकि हमारा अकेलापन
हमारे साथ होता है हमारा तन-मन
हमारा हृदय मस्तिष्क
पूरे अपनेपन के साथ हमारा अपना होता है
वास्तव में भरी भीड़ में हम
बिल्कुल अकेले होते हैं
उस वक़्त हमारे अपने अहसास भी
अपने नहीं होते
यह अकेलापन भी बड़ा अजीब होता है
भरी भीड़ में भी कोई क़रीब नहीं होता है
अकेले बैठकर हम घूम आते हैं
दुनिया भर के शहरों में
यादों में मिल आते हैं
जाने अनजाने चेहरों से भरी भीड़ में
हमारी खाली निगाहों को
सब चेहरे अजनबी नज़र आते हैं
कभी-कभी मुँह से
दो बोल भी नहीं आते हैं
भीड़ में अकेलेपन का अहसास
और भी गहरा हो जाता है
क्योंकि हमारे अहसासों पर
दूसरों का पहरा हो जाता है।

✷

मीठी बातें

बहुत कठिन है कैसे भूलें
बचपन की मीठी बातें
जब सोने के दिन होते थे
चाँदी सी उजली रातें
माँ बाबा की छाँव तले
जो बीता बचपन बड़ा अनोखा
न था कहीं कपट छल कोई
न था जिसमें कोई धोखा
साँझ ढले हम सखी सहेली
मिलकर सब खेला करते थे
इक दूजे की मसखरियों को
हँसी ख़ुशी झेला करते थे
तरह-तरह की कथा कहानी
दादा दादी से सुनते थे
और रात को नींदों में फिर
परियों के सपने बुनते थे
रातों को जब खुली छतों पर
सोने जाते थे सारे
देर रात तक धमाचौकड़ी
करते थे चंदा तारे
सुबह सवेरे चूँ-चूँ चिड़िया
हमें जगाया करती थीं।
कुहू-कुहू कर प्यारी कोयल

गीत सुनाया करती थी
कूलर ए.सी. में कटती हैं
अब कैसी फ़ीकी रातें
बहुत कठिन है कैसे भूलें
बचपन की मीठी बातें

वास्तविक आधार

अतिथि कौन है
जिसके आने की कोई तिथि नहीं
न जाने कब आयेगा
आज आयेगा या कल
देर तक रहेगा या कुछ पल
कोई अतिथि आता है किसी ज़रूरत के लिए
या किसी आस के लिए
कोई आता है
किसी दुख को भुलाने के लिए
या अपने अँधेरे जीवन में
अपने किसी उजास के लिए
कोई किसी भूली बिसरी
नेह की डोर से बँधा आता है
दिल के हाथों मजबूर होकर
खिंचा चला आता है
कोई अतिथि शायद आपके भेद लेने आता है
अपने छेदों से तिलमिलाकर
आपके छेद देखने आता है
हर अतिथि अपने दृष्टिकोण से आता है
अतिथि चाहे किसी दृष्टिकोण से आए
आपकी दृष्टि में सब अतिथि हैं
आप उन्हें करते हैं नमस्कार
उनका करते हैं सत्कार, यहीं आप बन जाते हैं
संस्कृति और परम्परा के वास्तविक आधार।

आईने के रंग

आईने के भी अपने रंग हैं
हर चेहरे की आईने से
अपनी-अपनी जंग है
आईना हँसता भी है अन्दर ही अन्दर
सबको आईने में दिखता
अपना चेहरा सुन्दर
चेहरा या मन जो भी सोचे
आईना तो सारे भेद जानता है
ऊपर से जो भी दिखे
आईना तो अन्दर तक पहचानता है
चेहरे की एक-एक रेखा को
देखता है, गुणता है, पढ़ता है
फिर वह अपने सामने वाले की तस्वीर
अपने अन्दर गढ़ता है
देखने वाला भी
आईने की सच्चाई को
झुठलाना चाहता है
आँखों की कमज़ोरी के बहाने
मन को बहलाना चाहता है
पर आईना भी
अन्दर ही अन्दर मुस्कुराकर
दिखाता नये ढंग है
आईने के भी अपने-अपने रंग हैं।

✳

आत्म-ज्योति

आत्मा में झाँकना
सीखो हृदय की आँख से
सैकड़ों सुराखों से
रोशनी झाँकती नज़र आयेगी
आत्मा से आत्मा का जब मिलन होगा
सच और झूठ की परख हो जायेगी
यह तो आपकी दृष्टि का दोष है
कि आपको कोई अच्छा
कोई खराब दिखाई देता है
पाँचों ऊँगलियाँ एक सी नहीं होतीं
फिर क्यों आपको हर हिसाब
बेहिसाब दिखाई देता है
दूसरों को अपने जैसा समझकर देखो
खरे और खोटे की सही पहचान हो जायेगी
बहुत थोड़ा है वक़्त
न सिर्फ़ ख़ुद पर रहो आसक्त
कर लो इस वक़्त का सही उपयोग
क्यों देते हो अपने को अपनों का वियोग
कर लो पूरी मानवता की भक्ति
दानवता के विरुद्ध लगा दो अपनी शक्ति
आत्मा की ज्योति, आत्मा में मिल जायेगी
इसके आगे सूरज की रोशनी भी
मंद पड़ जायेगी।

आधे ग़म दुगनी ख़ुशी

छोटी छोटी ख़ुशियाँ
छोटे छोटे ग़म
अगर दूसरों के साथ
बाँट सकें हम
तो ख़ुशियाँ दुगनी हो जायेंगी
और ग़म आधे रह जायेंगे
अकेले एक कंधे पर
मुर्दा भी नहीं चल पाता
तो कोई अकेला
कैसे घर परिवार
देश संसार चलायेगा
मैं को भुलाकर जो
हम हो जायेगा
वही व्यक्ति कर्त्तव्य निभा पायेगा
सबका दुःख अपना दुःख
सबका सुख अपना सुख
जान लेगा जो इस सच्चाई को
वही छू पायेगा आकाश की ऊँचाई को
अपनों से दूर रहने वाले के वादे
सिर्फ़ वादे रह जायेंगे
दिल से दिल मिलाकर चलो
दिलों में प्रेम की जोत जगाकर चलो
तुम्हारी ख़ुशियाँ दुगनी
और ग़म आधे रह जायेंगे।

✷

अँधेरा ही साथ होता है

रात में हम अकेले नहीं होते
अँधेरा भी हमारे साथ होता है
जो हमें मिलाता है ख़ुद से
आती है रात
किसी से होती नहीं बात
अँधेरा है सब तरफ़
आईने में खुद से भी नहीं
होती मुलाक़ात
ऐसे में जलती है
एक ज्योति अन्तर में
डूब हम जाते हैं
अन्तर के गह्वर में
जीवन के बहुत से पल
जो अनजाने में
कुरेद रहे थे अन्तस्तल
इस अँधेरे में
साफ़ दिखाई देते हैं
रात के सन्नाटे में
दिल के द्वारा
दिल से पूछे गए प्रश्न
साफ़ सुनाई देते हैं
रात के घने अन्धकार में
हम अन्तर्दर्शन करते हैं

भूल जाते हैं सबकुछ
सिर्फ़ ख़ुद से बात करते हैं
पर हम अकेले नहीं होते
अँधेरा भी हमारे साथ होता है
जो हमें मिलाता है ख़ुद से

बढ़ती हुई दूरियाँ

ज़माने की कैसी नई रीत आई
न कोई बहन अब न है कोई भाई

नज़रों में सबकी एक शून्य सा छाया
न प्रेम न सहानुभूति न ममता न माया

अकेलेपन का अहसास बढ़ती दूरियाँ
रिश्तों की तार-तार होती डोरियाँ

कच्चे धागों की तरह टूटते हुए रिश्ते
पानी से भी अधिक खून हुए सस्ते

एकाकीपन के चक्रव्यूह में मानवीय संवेदनाएँ खोईं
औरपचारिकताओं की धूम में भावनाएँ रोईं

भूल गए अपनी परम्परा रीतियाँ
सभ्यता संस्कृति पुरखों की नीतियाँ

भौतिकता के रंग में रंग गया मानव
स्वार्थ में डूबकर बन गया दानव।

मैं टूटना नहीं चाहती

मैं ज़िन्दगी को ढूँढती हूँ सपने में
मैं ख़ुद को खोजती हूँ अपने में
ख़ुद में ख़ुद को ढूँढने का यह सिलसिला
कब तक चलेगा
मेरा चूर-चूर हुआ मन
कब तक किरचों को
जोड़ने लगेगा
ज़िन्दगी की सच्चाइयाँ
कैसे परख पाऊँगी
रिश्तों की गहराइयाँ
कैसे निभा पाऊँगी
आत्मा का विश्वास
कहीं खो न जाए
इच्छाशक्ति की दृढ़ता
कहीं सो न जाए
मैं ज़िन्दगी में
रंग तलाश रही हूँ
मैं सोई आत्मा के लिए
उमंग तलाश रही हूँ
मैं टूटना नहीं चाहती
मैं ज़िन्दगी से रूठना नहीं चाहती
एक लम्बा मार्ग तय किया है
मेरी आशाओं ने पनपने में
मैं ज़िन्दगी को ढूँढती हूँ सपने में
मैं ख़ुद को खोजती हूँ अपने में।

बन्धु

बन्धु दुःख से दुःखी होकर
भाग्य को दोष न दो
वक़्त की मार से होश न खो
दुःख के दिन आए हैं
साथ कुछ मुश्किलें लाए हैं
आए हैं तो चले भी जायेंगे
हाँ ! कुछ खरोंच तुम्हें दे जायेंगे
याद रखो सृष्टि के इस नियम को
जो आया है वह जायेगा
कोई उसे रोक नहीं पायेगा
भाग्य के चक्र में
सुख और दुःख दोनों आते हैं
सृष्टि के चक्र में अपने पराये
कभी प्यार देते हैं
कभी सताते हैं
दुःख के दिनों को
ऐसी परीक्षा समझकर काटो
जो हमें अपने पराये की
पहचान कराते हैं
पराये आँख चुराते हैं
दूर चले जाते हैं
बन्धु तो वही है
जो संकट की घड़ी में साथ निभाते हैं
सुख और दुःख तो

आते जाते रहते हैं
दुःख के बाद ही तो
आँखों से खुशी के आँसू बहते हैं
उसी सुख की आस में
हम दुःख के त्रास सहते हैं।

उपलब्धि

मानव का जीवन
ईश्वर की महान सृष्टि का
एक छोटा सा कण
इस जीवन को कैसे निखारा जाये
छोटे से कण को कैसे सँवारा जाये
कि बन जाये स्नेह की ऐसी कहानी
जिसे सुनकर बन जाये दुनिया दीवानी
प्रेम की प्रसिद्धि हो
स्नेह की समृद्धि हो
सद्कर्मों में वृद्धि हो
छोटे से जीवन में यह
महानतम उपलब्धि हो।

कहना मुश्किल है

वक़्त की करवट
कब किसको कितना बदल दे
कहना मुश्किल है
अपूर्ण इच्छाओं
उत्कट लालसाओं
बदलती मान्यताओं के साथ
नित नए समीकरणों का बोझ ढोता मानव
ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थ
कहाँ गया परमार्थ
क्या किया धमार्थ
वक़्त को वश में करने की चाह में बन रहा दानव
कल आज और कल में
क्या पाया, क्या पा रहे हैं, क्या पायेंगे
मानवीय संवेदनाओं को
कहाँ तक निभायेंगे
जाने समीकरण कब बदल जायेंगे
अपने पराये और पराये अपने बन जायेंगे
भावनाओं के उद्वेग कब घातक हो जायेंगे
कहना मुश्किल है
बदलते वक़्त के साथ
दिल, दिमाग़, विचार
आचार और व्यवहार
कितने बदल जायेंगे
कहना मुश्किल है।

दूसरों का दुःख

जिसके दिल में
सिर्फ़ अपना दर्द रहता है
वह इन्सान कहलाता है
जिसके दिल में सिर्फ़ अपना नहीं
दूसरों का दर्द रहता है
जो दूसरों का दुःख दर्द देखकर
अपना दर्द भूल जाता है
जो दूसरों को सुख में देखकर
ख़ुशी में झूल जाता है
दूसरों के माथे की लक़ीर
जिसके दिल में खिंच जाती है
दूसरे पर अन्याय देख
जिसकी मुट्ठी भिंच जाती है
जिसकी आँखों में
छोटों के लिए प्यार
बड़ों के लिए सत्कार रहता है
जिसका हर शब्द
दिल से निकला उद्‌गार होता है
जो पर सेवा में
भगवान को देखता है
वह इन्सान
भगवान कहलाता है।

सत्य का अवलोकन

बँटी आस्थाओं
खंडित कामनाओं
बिखरी भावनाओं का बोझ लेकर
कैसे जी पाओगे
शून्य में तकते
विस्फ़ारित नेत्रों से
हृदय को केन्द्रित कैसे कर पाओगे
जब अनगिन तूफ़ान
हृदय में हों उफ़नते
कितना सह पाओगे
खंडित कामनाओं की पीड़ा को
मस्तिष्क में उपजी
अनिर्णय की ब्रीड़ा को
कैसे रख पाओगे
खुशियों को आमन्त्रण
निर्णय तुम्हें स्वयं ही करना है
क्रिया
प्रतिक्रिया
हाँ या न से सम्भाषण
अपने अन्तर के सत्य का अवलोकन
तुम्हें स्वयं ही करना है।

नित नये मोड़

अगर आती जाती साँसों का नाम ही ज़िन्दगी है
तो ज़िन्दगी चल नहीं रही
दौड़ रही है
पल-पल क्षण-क्षण दुनिया के पीछे छोड़ रही है
हर साँस के साथ एक नया काम करना है
किसी को अच्छा, किसी को बुरा करना है
किसी को अत्याचार करना है
किसी को सहना है
कल कोई ऊँचा उठेगा
कोई नीचे जायेगा
कोई वोट देकर, किसी को राजा बनाकर
स्वयं प्रजा बन जायेगा
और हर साँस को जीने के लिये
उस राजा को डर-डर कर जियेगा
जिसे उसने स्वयं कुर्सी पर बिठाया था
खुद नीचे रह कर उसको उठाया था
यह ज़िन्दगी में कैसी होड़ चल रही है
कहीं कोई जीने के नाम पर
पैसे बटोर रहा है
रातों रात अमीर होने के लिये
कितने जोड़ तोड़ कर रहा है
कहीं कोई धर्मस्थलों पर
खून को होली रचा रहा है
कहीं कोई हाथ में बंदूक लेकर

धर्म को बचा रहा है
जाने वह कैसा धर्म है
जिसे बचाने के लिए
बम और बंदूक का सहारा लेना पड़ता है
कौन है जो धर्म का
इतना वीभत्स रूप गढ़ता है
नियति क्यों चलती साँसों को
नित नया मोड़ दे रही है।

बुढ़ापा लावारिस हो गया

अख़बार में छपी
एक घटना ही थी
रोज़मर्रा की तरह
एक दुर्घटना ही थी
एक बड़े से आदमी की
बड़ी सी गाड़ी के नीचे आकर
एक छोटा सा आदमी मर गया
किसी वी.आई.पी. या वी.वी.आई.पी. की
बेटी की शादी
या उसके किसी छोटे से ऑपरेशन की
या उसके किसी दूर पार के
रिश्तेदार की मौत की
बड़ी सी महत्वपूर्ण ख़बर तो थी नहीं
छोटे से आदमी की
छोटी सी मौत के लिए
दो ही पंक्तियाँ काफ़ी थीं
किसी तीसरे या पाँचवे पृष्ठ पर छपी थीं
किसी ने पढ़ीं किसी ने नहीं भी पढ़ी थीं
गाड़ी वाला हज़ार रुपया देकर
बाइज़्ज़त चला गया
पर इस सारे हादसे में छला गया
एक पूरा परिवार
वह छोटा सा आदमी था
जिसका आधार

वह आदमी
जो किसी परिवार की रोज़ी-रोटी था
जो किसी का बेटा, किसी का पिता,
किसी का पति था
वह ख़ानदान का वारिस कहाँ खो गया
जिसके बिना
आज एक औरत विधवा
बच्चे यतीम
और बुढ़ापा लावारिस हो गया।

रोटी के टुकड़े

मैंने बहुत सी कहानियाँ पढ़ी हैं
रोटी के टुकड़ों में
कितनी ही ज़िन्दगानियाँ लिखी देखी हैं
रोटी के टुकड़ों में जीवन के बदलते दर्शन
पेट की भूख के आगे ममता का अर्पण
भूख से तिल-तिल मरते आदमी को मैंने
अपने बच्चों को रोटी के टुकड़ों में बदलते देखा है
पेट की आग सारे आदर्शों को बदल देती है
रिश्ते नाते धर्म जाति
सब छूट सकते हैं
इन्सान के क़दम कहीं भी बहक सकते हैं
किसी को भी लूट सकते हैं
मैंने ज़िन्देगी के समीकरणों को बदलते देखा है
रोटी के टुकड़ों में
दुनिया के सारे सच झूठे हो जाते हैं
जब पेट रोटी माँगता है
दुनिया की कोई भाषा समझ में नहीं आती
पेट सिर्फ़ रोटी की भाषा जानता है
मैंने दुनिया की खबरें पढ़ी हैं
रोटी के टुकड़ों में
मैंने भूख से मरते
आदमी के चेहरे पढ़े हैं
रोटी के टुकड़ों में।

✷

नीलाभ

मेरी छत पर टँगा
एक नीला चँदोवा
विस्तृत नीला आसमान
मेरे सामने फैली
अनन्त नीली जलराशि
एक सागर महान
प्रकृति का यह शान्त सुखद रूप
प्यारा सा हल्का नीला रंग
मेरे चारों तरफ़ बिखरा पड़ा है
मैं नीलाभ गगन में
नीलाभ जल में
स्वयं को एकाकार होता महसूस कर रही हूँ
मेरी आँखें
एक अजीब सी अनुभूति से बंद हुई जा रही हैं
और यह सारी नीलिमा
मेरे अन्तर में समाहित होती जा रही हैं
जैसे राम और कृष्ण का रंग
साकार होकर मेरे सामने आ गया है
जैसे मेरी कल्पनाओं ने
रूप और आकार ले लिया है
जैसे मेरे ईश ने
सब ओर से मुझे
अपने रंग में रंग लिया है
और सूरज की किरणों ने मिलकर
सबको सतरंग कर दिया है।

✷

रिश्तों की डोरियाँ

यूँ तोड़ कर न जाओ
रिश्तों के ये धागे
जो भी हुआ भूल जाओ
बहुत कुछ है आगे
भूल जाने का सुख भी
बड़ा अजीब होता है
गल्तियों को भुलाकर ही इन्सान
इन्सान के क़रीब होता है
रिश्तों में आई दरार
भरने का प्रयत्न करो
अपनों से सच्चा प्यार
करने का यत्न करो
रिश्तों को तोड़ना
बड़ा कठिन होता है
टूटने का दर्द
हर पल छिन होता है
मुँह मोड़कर न पकड़ो
अनजानी राहें
खींचकर तुम्हें यही लायेंगी
अपनों की आहें
इतनी कच्ची नहीं होतीं
रिश्तों की डोरियाँ
पर होती हैं
रिश्तों की कुछ
अपनी मजबूरियाँ।

सागर की लहरें

टकराकर चट्टानों से
लौट-लौट जाती हैं
ताल पर तरंगों की
विरह गीत गाती हैं
पल भर में आती हैं
पल भर में जाती हैं
सागर की लहरें
क्या-क्या कह जाती हैं

चूर हुआ शायद
सपना है कोई
तट से टकराकर
कितना ये रोई
बार-बार आती हैं
किसको बुलाती हैं
सागर की लहरें
क्या-क्या कह जाती हैं

सबके चरण छू-छू कर
क्षमा जैसे माँगें
किसकी राह तकती ये
दिन रात जागें
चाँद से क्या कहने को
आतुर हो जाती हैं
सागर की लहरें
क्या-क्या कह जाती हैं।

मनचली लहरें

आज क्यों तूफ़ान बरपाने चली हो ?
राज़ जो सीने में हैं
क्या उनको बतलाने चली हो ?
ऐसा लगता है
युगों से क्रोध जो तुमने दबा रखा था दिल में
अपनी इन गहन गहराइयों में से
वो उबल कर आज बाहर आ गया है
यह अचानक सिरफिरों सी
उछलकर क्यों तट से टकराने चली हो
राज़ जो सीने में हैं
क्या उनको बतलाने चली हो
हर लहर में आज
ध्वनि विद्रोह की देती सुनाई
हर लहर तैयार है
छूने को ऊँचे आसमानों की ऊँचाई
हर लहर में आ रहे
आसार तूफ़ानी हवा के
हर लहर लगता है
लड़ने को चली अपने पिया से
थामकर रखो स्वयं को
तुम बहुत ही मनचली हो
राज़ जो सीने में हैं
क्या उनको बतलाने चली हो ?

✷

ठंडी आग

मानव जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है
स्वयं मानव जीवन
कैसी विडम्बना है
मानव जिस जीवन को
इतने प्रयत्नों से प्राप्त करता है
जिसे पाकर वह
स्वयं पर अभिमान करता है
वही जीवन एक दिन
भारी लगने लगता है
जी जलने लगता है
जीना कठिन लगने लगता है
दिल सबकुछ छोड़ देने को
करने लगता है
किन्तु जीवन से पलायन
आसान तो नहीं होता
जीवन से भाग कर भी
अन्तर की आग बुझ जायेगी
ऐसा प्रमाण भी नहीं होता
मानव को
अन्तर में लगी इस आग के साथ ही
जीना है
क्योंकि अन्तर की यह आग
चिता की आग के साथ ही
ठंडी होती है
यही मानव जीवन की
सबसे बड़ी त्रासदी है।